1		2
2.	चण्डीगढ़	153 2
3.	दादरा और नागर हवेली	2.1
4.	दिल्ली	793.6
5.	दमन और द्वीव**	—
6.	लक्ष्यद्वीप	5.0
7.	पांडिचेरी	112.7
	योग :	32776.2

नोट : 1.*कोई रोजगार कार्यालय कार्य नहीं कर रहा है ।

2. ** आंकडे नहीं रखे जाते हैं ।

3. हो सकता है कि आंकडे पूर्णाकों के कारण जोड़ से मेल न खायें ।

कृषि के विकास के लिये अनुसंधान

1380. **श्री राम नरेश यादव :** क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) गत 3 वर्षों के दौरान कृषि के विकास के लिए किए गए अनुसंधानों का ब्यौरा क्या है और इनका कृषि उत्पादन और इसकी किस्मों पर क्या प्रभाव पड़ा है ;

(ख) क्या सरकार ने इन अनुसंधानों को ग्राम किसानों तक पहुंचाने के लिए कोई कार्यक्रम तैयार किया है यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ;

(ग) गत 5 वर्षों के दौरान कृषि उत्पादन की वृद्धि दर क्या रही, और प्रत्येक राज्य में वृद्धि की दर और उत्पादन का वर्ष-वार ब्यौरा क्या है ; सरकार कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए क्या कदम उठा रही है और इस समय किसानों को क्या राहत दी जा रही है ; और

(घ) केन्द्रीय सरकार ने राजस्थान को कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए अब तक कितनी सहायता दी है, क्या राजस्थान के रेगिस्तानों में सुधरी हुई कृषि के लिए कोई अनुसंधान कार्यक्रम तैयार किया है और यदि हां, तो क्या सरकार ने इस संबंध में कोई योजना तैयार की है राजस्थान में सातवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान हुए कृषि उत्पादन का वर्ष-वार ब्यौरा क्या है और आठवीं पंचवर्षीय योजना के लिए इस संबंध में क्या लक्ष्य निर्धारित किए गए है ?

उप प्रधान मंत्री और कृषि मंत्री (श्री देवी लाल) : (क) महोदय, पिछले तीन वर्षों के दौरान विभिन्न फसलों के उम्दा बीज और अधिक उपज देने वाली किस्मों/संकर किस्मों के विकास के लिए नए अनुसंधान कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए है । इन प्रयत्नों के फलस्वरूप, विभिन्न फसलों की अनेक अधिक पैदावार वाली किस्में/संकर किस्में जिनमें अनाज की 120 , तिलहन की 64, दाल की 48 और व्यावसायिक फसलों की 28 किस्में शामिल हैं, जारी की गई हैं/उनका पता लगाया गया है । इन प्रयत्नों के फलस्वरूप वर्ष 1989–90 के दौरान देश में कुल खाद्यान्न का उत्पादन 17 करोड 20 लाख टन से भी अधिक होने की संभावना है ।

(ख) ग्राम किसानों को सुधरी किस्मों के बीज उपलब्ध करवाने के लिए केंद्रीय क्षेत्र में तथा राज्य स्तर पर अनेक बीज उत्पादक एजेंसियों की स्थापना की गई है। ये एजेंसियां हैं —(1) राष्ट्रीय बीज निगम, (2) राज्य कृषि निगम और (3) राज्य बीज निगम ।

(ग) पिछले पांच सालों में कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है । अखिल भारतीय स्तर से कुल खाद्यान्न का उत्पादन वर्ष 1983–84 में 15 करोड़, 23 लाख 74 हजार टन से बढ़कर वर्ष 1988–89 में 17 करोड़ 2 लाख , 53 हजार टन हो गया है । मुख्य फसलों के उत्पादन का रुझान वर्ष और राज्य के अनुसार अनुबंध में दिया गया है । [देखिए परिशिष्ट 153, अनुबंध संख्या 60]

भारत सरकार किसानों को राहत पहुंचाने के रूप में विभिन्न कृषि साधनों के लिए वित्तीय सहायता, महत्वपूर्ण

साधनों की व्यवस्था करने के लिए ऋण परामर्श आदि की सुविधा प्रदान कर रही रही है ।

(घ) राजस्थान में कृषि को सुधारने के लिए, विभिन्न फसलों के लिए अखिल भारतीय अनुसंधान कार्यक्रमों के अंतर्गत अनेक अनुसंधान केन्द्र और केन्द्र द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम शुरू किए गए हैं । इन योजनाओं के बारे में पूरी जानकारी संलग्न विवरण में दी गयी है । (नीचे देखिए) सातवीं योजना के दौरान राजस्थान में विभिन्न फसलों की उत्पादन का रुझान अनुबंध–1 में दिया गया है ।

विवरण

अखिल भारतीय समन्वित अनुसन्धान कार्यक्रमों और केन्द्र द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों के तहत राजस्थान में काम कर रहे अनुसन्धान केन्द्र

शीर्षक	केन्द्र का स्थान
(क) अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रायोजनाएं	
1. गेहूं . . .	दुर्गापुर, उदयपुर, कोटा
2. धान . . .	कोटा
3. मक्का . . .	उदयपुर, बांसवाड़ा, जयपुर
4. जौ . . .	दुर्गापुर
5. ज्वार . . .	उदयपुर
6. ग्वार . . .	दुर्गापुरा
7. बाजरा . .	दुर्गापुरा
8. दालें . . .	दुर्गापुरा, फतेहपुर, श्रीगंगानगर
9. चुकन्दर . .	श्रीगंगानगर
10. कपास . .	श्रीगंगानगर, बांसवाड़ा
11. राष्ट्रीय बीज प्रायोजना .	दुर्गापुरा
12. तिलहन . .	श्रीगंगानगर, जोबनेर, दुर्गापुरा, मंडौर

(ख) केन्द्र द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम

1. राष्ट्रीय तिलहन विकास कार्यक्रम ।
2. तिलहन उत्पादन संवर्धन कार्यक्रम ।
3. राष्ट्रीय जलसंभर विकास कार्यक्रम ।
4. राष्ट्रीय दलहन विकास कार्यक्रम ।
5. छोटे और सीमांत किसानों को सहायता ।
6. विशेष खाद्यान्न उत्पादन कार्यक्रम-गेहूं ।
7. विशेष खाद्यान्न उत्पादन कार्यक्रम-मक्का ।
8. विशेष खाद्यान्न उत्पादन कार्यक्रम-दलहन ।
9. विस्तार कपास विकास कार्यक्रम ।